(२) प्राकृतिक धर्म
(Naturalistic Religion)

प्राकृतिक धर्म किसे कहते हैं ?

हमलोगों ने प्रारम्भिक धर्म के अध्ययन में पाया है कि यह धर्म केवल असभ्य एवं अशिक्षित व्यक्तियों का ही था, जिसमें अनेक त्रुटियाँ एवं असंगतियाँ थीं। पर यह स्वाभाविक भी था, क्योंकि आरम्भकाल में जब मानव जंगलों में रहता था, तथा जब उसका मानसिक विकास नहीं हो पाया था, वह इससे अच्छे तथा विकसित धर्म की कल्पना कर सकने में असमर्थ था।

परन्तु ज्यों-ज्यों सभ्यता एवं संस्कृति का विकास होता गया, मानव मस्तिष्क का भी विकास हुआ और इसके फलस्वरूप लोगों ने प्रारम्भिक धर्म की उपेक्षा कर एक अधिक सुन्दर धर्म को जन्म दिया। इस धर्म को "प्राकृतिक धर्म" कहकर पुकारा गया। प्राकृतिक धर्म प्रारम्भिक धर्म के बाद आता है तथा उसकी अपेक्षा यह अधिक सुसंगठित तथा विकसित धर्म है।

प्रारम्भिक धर्म की तरह ही प्राकृतिक धर्म कहने से ही इसके स्वरूप का आभास हो जाता है। प्राकृतिक धर्म वह धर्म है, जिसने प्राकृतिक वस्तुओं को सबसे अधिक महत्त्व दिया और प्रकृति को पूजा का विषय माना। प्रकृति की मुख्य चीजें, जैसे—चाँद, सूरज, तारे, जल, आकाश, वायु आदि की पूजा प्राकृतिक धर्म में देखने को मिलती है। इन सभी वस्तुओं को लोगों ने ईश्वर का रूप दिया। अतः यह कहा जा सकता है कि प्राकृतिक धर्म प्रकृति के मुख्य वस्तुओं, घटनाओं तथा प्राकृतिक नियमों को ही परम सत्य मानकर उनकी आराधना करता है।

प्रारम्भिक धर्म से प्राकृतिक धर्म का महत्त्व अधिक स्पष्ट है। इसका मूल कारण यह है कि हम प्राकृतिक धर्म में उन चीजों का अभाव पाते हैं, जो मूल रूप से प्रारम्भिक धर्म में वर्तमान थीं। प्रारम्भिक धर्म में लोगों ने अनेकानेक ईश्वरों को माना था और अलग-अलग वर्ग के लोगों के लिए अलग-अलग ईश्वर थे। अतः वह एक संकुचित धर्म था। प्राकृतिक धर्म में यद्यपि अनेक ईश्वरों को स्वीकार किया गया है, तथापि लोगों ने उनका नामकरण किया है, साथ ही यहाँ ऐसी कोई बात नहीं कि अलग-अलग व्यक्ति या परिवार के लिए अलग-अलग ईश्वर थे, जैसा कि "टोटेमिज्म" में हमलोगों ने देखा। इसके साथ ही प्रारम्भिक धर्मों ने ईश्वर को गुणों से विभूषित नहीं किया था पर प्राकृतिक धर्म ईश्वर में अनेक गुणों को स्वीकार करता है।

कभी-कभी कुछ लोग प्राकृतिक धर्म को 'प्रकृतिवाद' (Naturalism) समझने की भूल कर बैठते हैं। परन्तु 'प्रकृतिवाद' कभी भी प्राकृतिक धर्म नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि प्रकृतिवाद एक सिद्धान्त है जो प्राकृतिक नियमों का अध्ययन एवं उनकी व्याख्या प्रस्तुत करता है ; जबकि प्राकृतिक धर्म एक विकसित धर्म है। इसके साथ ही प्रकृतिवाद चूँकि प्राकृतिक नियमों को ही परम सत्य मानता है इसलिए वह ईश्वर की

Scanned by TapScanner

सत्ता में विश्वास नहीं करता, जबकि प्राकृतिक धर्म एक धर्म होने के कारण ईश्वर को परम सत्ता मानता है। अतः प्रकृतिवाद को प्राकृतिक धर्म के रूप में नहीं समझना चाहिए। दोनों ही दो अलग-अलग चीजें हैं।

प्राकृतिक धर्म के मुख्य उदाहरण

(Important examples of Naturalistic Religion)

प्राकृतिक धर्म के स्वरूप के अध्ययन के पश्चात् हमें विश्व के मुख्य प्राकृतिक धर्मों का अध्ययन कर लेना चाहिए। प्राकृतिक धर्म की महत्ता भारतवर्ष में वैदिक काल में देखने को मिलता है। हम वेदों में पाते हैं कि उस काल के लोग प्राकृतिक वस्तुओं की उपासना किया करते थे। चाँद, तारे, पवन, आकाश, वर्षा आदि की पूजा वैदिक काल में मुख्य स्थान रखती थी। आकाश और वरुण की पूजा वैदिक काल में सबसे मुख्य थी।

वैदिक काल के बाद भारतीय दर्शन के अन्दर सांख्य ने प्राकृतिक धर्म को स्वीकार किया है। सांख्य के अनुसार प्रकृति और पुरुष परम सत्ता है और इसलिए इन दोनों के प्रेतों (spirit) को पूजा का विषय बनाया। प्रकृति विश्व के विकास का आधार है। संसार के प्रत्येक वस्तुओं का उद्भव एक मात्र प्रकृति से हुआ है और इसलिए वह परम सत्ता है और यही कारण है कि सांख्यदर्शन ने प्रकृति को ईश्वर का रूप दिया। परन्तु यह विचार दोषपूर्ण है। क्योंकि प्रकृति को ईश्वर के स्थान पर नहीं माना जा सकता है। साथ ही प्रकृति पुरुष की सहायता से ही विकास की क्रिया में सफल हो सकता है। स्वयं प्रकृति अकेली कुछ नहीं कर सकती और इसलिए प्रकृति को सब-कुछ मान लेना दोषपूर्ण कहा जायगा।

स्पिनोजा (Spinoza) के अनुसार भी प्रकृति पूजा का विषय है, क्योंकि इसके अनुसार प्रकृति और ईश्वर अलग-अलग दो सत्ताएँ नहीं, बल्कि एक ही सत्ता के दो विभिन्न नाम हैं। प्रकृति स्पिनोजा के अनुसार और कुछ नहीं द्रव्य (substance) है, जो चरमसत्ता अर्थात् परमसत्ता है। स्पिनोजा ने इस बात को स्वीकार किया है कि विश्व अर्थात् प्रकृति ही ईश्वर है और ईश्वर ही प्रकृति अर्थात् विश्व है। और इसलिए प्रकृति की पूजा स्पीनोजा ने स्वीकार की है। अतः स्पीनोजा ने भी प्राकृतिक धर्म को माना है।

इसके अतिरिक्त बेबिलोनिया, चीन और इजिप्ट में भी प्राकृतिक धर्म को स्वीकार किया गया है। इजिप्ट में सूर्य को 'रा' (Ra) के नाम से पुकारा गया और इसे ही पूजा का विषय माना गया। बेबिलोनिया में पृथ्वी, स्वर्ग और सागर को पूजा का विषय माना गया और इनकी आराधना की गयी। इसी प्रकार चीन में ट्यो (tao) को पूजा का विषय माना, जो प्रकृति से अलग नहीं।

Scanned by TapScanner

अतः हम पाते हैं कि प्राकृतिक धर्म विश्व के अनेक मुख्य स्थानों में स्वीकार किया गया। इस धर्म के माननेवालों ने चाहे, किसी रूप में भी हो, प्रकृति के ही मुख्य अंगों की उपासना की है, जैसा कि हमने अभी देखा है।

प्राकृतिक धर्म का मूल्यांकन
(Evaluation of Naturalistic Religion)

प्राकृतिक धर्म के अध्ययन के उपरान्त यह आवश्यक हो जाता है कि हम इसका मूल्यांकन करें। प्रारम्भिक धर्म के समान ही इस धर्म में भी कुछ त्रुटियाँ हैं पर इसके साथ ही कुछ विशेषताएँ भी।

सर्वप्रथम इस धर्म की विशेषता यह है कि प्रारम्भिक धर्म की तरह यह जादू से अस्त नहीं बल्कि यहाँ हम ईश्वर की एक सुन्दर व्याख्या पाते हैं। लोगों ने प्रकृति के अन्दर जितनी शक्तिशाली वस्तुएँ हैं, उन्हें आराधना का विषय माना है। यहाँ हम अन्ध-विश्वास तथा जादू का कोई प्रभाव नहीं पाते। अतः यह कहा जा सकता है कि यह प्रारम्भिक धर्म की तरह न होकर एक विकसित धर्म है।

प्राकृतिक धर्म की दूसरी विशेषता यह है कि इस धर्म ने सांसारिक व्याख्या तथा तारतम्य को स्वीकार किया है। प्राकृतिक धर्म के माननेवालों में 'कार्य-कारण' की व्याख्या करने की योग्यता थी और इसके आधार पर ही वे विश्व की व्यवस्था की व्याख्या कर पाते थे। इसके साथ ही प्राकृतिक नियमों तथा प्राकृतिक घटनाओं की भी व्याख्या प्राकृतिक धर्म कर पाता है। भूकम्प, बाढ़ आदि को लोगों ने जादू न समझकर प्राकृतिक नियमों के रूप में समझा। रात-दिन की व्याख्या भी कार्य-कारण के आधार की गई। अतः हम कह सकते हैं कि प्राकृतिक धर्म कार्य-कारण की उचित व्याख्या के आधार पर सांसारिक व्यवस्था को स्वीकार करता है।

प्राकृतिक धर्म, धार्मिक तथा नैतिक भावनाओं से ओत-प्रोत जान पड़ता है। इस धर्म के माननेवाले ईश्वर के प्रति श्रद्धा और भक्ति की भावना रखते थे तथा अपनी वाह्य क्रियाओं के माध्यम से धार्मिक भावनाओं को व्यक्त करते थे। परन्तु ईश्वर के प्रति भय की भी भावना थी। और इस प्रकार वे किसी प्रकार का अनैतिक कार्य नहीं करते थे।

इसके साथ ही प्राकृतिक धर्म की एक विशेषता यह है कि इसमें अनेक देवताओं को स्वीकार किया गया है। इस कारण प्राकृतिक धर्म वहुदेववाद (Polytheism) से परिपूर्ण है। अलग-अलग ईश्वर अलग-अलग घटनाओं का कारण समझा जाता था। जैसे—इन्द्र को शक्ति के रूप में माना जाता है, वरुण को न्याय का केन्द्र समझा जाता था।

Scanned by TapScanner

पर इन विशेषताओं के बावजूद प्राकृतिक धर्म में कुछ त्रुटियाँ एवं असंगतियाँ दीख पड़ती हैं। सर्वप्रथम इस धर्म में अनेक ईश्वर को स्वीकार किया गया है परन्तु सब में व्यक्तित्वका अभाव है। हम जानते हैं कि धार्मिक भावना के विकास के लिए एक व्यक्तित्व पूर्ण ईश्वर का होना आवश्यक है। पर, प्राकृतिक धर्म में इसका अभाव है, और इसलिए यह कहा जा सकता है कि प्राकृतिक धर्म धार्मिक भावना के विकास में बाधक है।

दूसरी बात यह है कि प्राकृतिक धर्म अज्ञेयवाद (agnosticism) को जन्म देता है। प्राकृतिक धर्म के अनुसार केवल प्रकृति ही परम सत्ता है जिसके परे हम किसी दूसरी शक्ति की कल्पना नहीं कर सकते हैं। और, इसलिए इस धर्म में प्राकृतिक वस्तुओं को ईश्वर के रूप में मानकर उसकी पूजा की गयी है। अतः यह अज्ञेयवाद को जन्म देता है।

पुनः यह धर्म बहुदेववाद (Polytheism) को स्वीकार करता है। पर, यह अनुचित है क्योंकि ऐसा करने से ईश्वर ससीम बन जाता है। कोई भी ईश्वर परम सत्ता नहीं माना जायगा। इसके साथ ही अनेक ईश्वर होने के कारण सर्वशक्तिमान होने के लिए उनमें सदा आपस में होड़ लगा होगा।

इसके अतिरिक्त अन्त में यह कहा जा सकता है कि प्राकृतिक धर्म नियतिवाद (Determinism) को जन्म देता है। इसके अनुसार प्रकृति की हर वस्तु एवं घटना एक नियम से बँधी है, वे स्वतन्त्र नहीं और उसमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप भी सम्भव नहीं।

इस प्रकार हम पाते हैं कि प्राकृतिक धर्म में भी कुछ गुण तथा दोष हैं। फिर भी यह प्रारम्भिक धर्म से अधिक विकसित धर्म कहा जायगा।

Scanned by TapScanner